ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

गिरीश कर्नाड के नाटक ययाति में मिथकीय चेतना

डॉ. बंदना ठाकुर सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग जम्मू विश्वविद्यालय
ई-मेलः thakurbandana469@gmail.com

शोध सार

'मिथक' प्राचीन काल से चली आ रही विभिन्न पौराणिक, ऐतिहासिक घटनाएँ एवं लोक प्रचलित कथाएं हैं जो ऊपर से देखने पर तो काल्पनिक लगती है परंतु उनके भीतर निहित कथ्य का वर्तमान संदर्भों के साथ जुड़ना उसकी शाश्वतता को प्रमाणित करता है। आरंभ में मिथक को काल्पनिक कथ्य कहा जाता था किंतु आज यह वर्तमान संदर्भों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने में पूरी तरह सक्षम है। गिरीश कर्नाड का नाटक ययाति महाभारत कीमिथकीय कथा पर आधारित है।यह मूल रूप में कन्नड़ भाषा का नाटक है जिसका हिंदी अनुवाद बी.आर. नारायण ने किया। इस नाटक में गिरीश कर्नाड ने समकालीन विद्रूपता और विसंगतियो को उभारने के लिए महाभारत के आदि पर्व की कथा को आधार बनाया है। कर्नाड ने राजा ययातिकीमिथक कथा को आधुनिक परिस्थितियों और घटनाओं की समकक्ष रखा है ताकि आधुनिक समाज अपनी पौराणिक कथाओं के जरिए जीवन की शाश्वत छटपटाहट को समझे।

बीज शब्द: भौतिकतावाद, आख्यान, विद्रूपता, अस्तित्ववाद, उदंडता, कर्तव्यहीनता, कंठस्थ, अभिभावक, दाम्पत्य, नश्वरता, शाश्वत, पौराणिक, पुराकथा, अलौकिक, पूर्वधारणा।

मूल आलेख: पुराकथाओं का वह तत्व जो नयी स्थितियों में नए अर्थ को वहन करे,मिथक कहलाता है। मिथ या मिथक का शाब्दिक अर्थ है-परम्परागत, पौराणिक या लोक विश्वासमूलक संदर्भ। मिथक ऐसे संदर्भ हैं जिनके पीछे पूर्वधारणा या विश्वास की शक्ति निहित होती है। प्रत्येक युग का साहित्यकार अपने समय का सच व्यक्त करने के लिए मिथक में नया अर्थ भर कर उसे प्रस्तुत करता है। मिथक साहित्यकार का प्राणवान शस्त्र भी है जिसके माध्यम से वह न केवल पाठकों को संस्कृति और अतीत से जोड़े रखता है बल्कि अपने परिवेश में मौजूद अन्तर्विरोधों की ओर उसका ध्यान भी आकर्षित करता है।

मिथकशब्द अंग्रेजी के मिथ (**myth**) का हिन्दी प्रतिरूप है "मिथ(**myth**) शब्द का उद्भव यूनानी शब्द 'मिथस' (**mythos**) से हुआ है। जिसका अर्थ है मुँह से निकला हुआ।"[1] इस प्रकार इसका संबंध मौखिक कथा से जुड़ गया। हिन्दी मेंमिथक के लिए पुराणकथा; पूर्ववृत; आख्यान; धर्मकथा जैसे शब्द प्रयुक्त होते रहे हैं। इन शब्दों से मिथक का अर्थ संप्रेषण नहीं हो पाता। प्रारंभ में मिथक को अलौकिक या दैवीय कथाएँ कहकर इसका संबंध धर्म से जोड़ा जाता था। इसे काल्पनिक और अतार्किक समझा जाता रहा है। विश्वकोश ब्रिटेनिका के अनुसार, "मिथक अज्ञात घटनाओं की व्याख्या द्वारा वास्तविक घटनाओं को सामने लाता है और विशेष रूप से धार्मिक संस्कारों और मान्यताओं से जुड़ा होता है।''[2] इस परिभाषा में मिथक को धर्म के साथ संबंधित माना गया है किन्तु कालान्तर में इसके सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष को समझते हुए धर्म के संकुचित दायरे से निकालकर मिथक की व्याख्या होने लगी। बृहत् हिन्दी कोष में मिथक को स्पष्ट करते हुए कहा गया है-"प्राचीन पुराकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नये अर्थ का वहन करे।"[3] प्रत्येक युग का रचनाकार मिथक का प्रयोग एक नये अर्थ में करता है जिसके द्वारा वह अपने युग के संदर्भों को वाणी प्रदान करता है। मिथक की इसी गतिशील प्रवृति के कारण यह यथार्थ का बोध कराने का शक्तिशाली माध्यम बना है।डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, "मिथ के पर्याय रूप में मिथक शब्द के निर्माण में अर्थ साम्य की अपेक्षा ध्वनि साम्य की प्रेरणा ही अधिक रही है अर्थात समानार्थक की अपेक्षा ध्वनि साम्य की प्रेरणा ही अधिक रही है।"[4] हिंदी में मिथक शब्द आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की देन है

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

'मिथ' शब्द के साथ 'क' प्रत्यय जोड़ कर उन्होंने मिथक का प्रयोग किया है।मिथक की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा है "मिथक तत्व वास्तव में भाषा का पूरक है सारी भाषा इसके बल पर खड़ी है आदिमानव के चित में संचित अनेक अनुभूतियाँ मिथक के रूप में प्रकट होने के लिए व्याकुल रहती हैं मिथक वस्तुतः उस सामूहिक मानव की भाव निर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है।"[5] इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि मनुष्य की भाषा के साथ ही मिथक का उद्भव हुआ और मिथक वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य प्राचीन काल से लेकर आजतक की अनुभूतियों को व्यक्त करता रहा है

मिथक और साहित्य का घनिष्ट संबंध है स्वातंत्र्योतरसाहित्यकारों ने प्राचीन मिथक को अपने साहित्य में चित्रित कर उन्हें नया अर्थ देने की कोशिश की है अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा नाटक अभिनय कला, प्रस्तुतीकरण,रंगदर्शन जैसी रंगमंचीय विशेषताओं के कारण साधारण जन को थोड़े ही समय में प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यहाँ अन्य विधाएं कहानी, उपन्यास पढ़ें जानें या लिखे जाने तक ही सीमित हैं नाटक पढ़नेलिखने, के साथ साथ देखने के गुण से भी संपन्न है, इसे अपनी बात सशक्त रूप से पाठक तक पहुंचाने के लिए प्रयोगधर्मी माध्यमों की आवश्यकता होती है।इन्हीं माध्यमों में से एक है मिथक। नाटककार 'मिथक' का प्रयोग नाटक की सृजनात्मक आवश्यकता केतहत करता है। वेद-पुराण ,रामायणमहाभारत,,इतिहास तथा लोक कथाओं में मिथकों का विपुल भंडार रहता है। नाटककारों ने इन मिथकों को व्याखायित करते हुए उन्हें अपने समय से जोड़कर युगबोध को अभिव्यक्ति दी है। इसे वर्तमान और अतीत के बीच संपर्क सूत्र कहा जा सकता है। मिथक जिस समाज में प्रचलित होता हैइतिहास, की ही तरह पूर्ण सत्य माना जाता है। लोकमानस का इस पर अटूट विश्वास होता है। अतः विश्वसनीयता मिथक का अनिवार्य तत्व है। मिथकीय कथाएँ अधिकतर अलौकिकता का कलेवर लिए धर्म के रूप में हमारे समक्ष आती है। मिथक का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है प्रासंगिकता,मिथक केवल अतीत ही न होकर समकालीन तथा वर्तमान संदर्भो कोअभिव्यक्ति देने का साहस रखता है। इसकी प्रासंगिकता ही इसकी सार्वकालिकता तथा सार्थकता का प्रमाण है। प्रकृति, धर्म, लोकविश्वास, मनुष्य की आंतरिक वृत्तियाँराजनीति, ऐतिहासिक चरित नायक मिथक के स्रोत के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।आरम्भ में मिथक को काल्पनिक कथ्य कहा जाता था किंतु आज मिथक वर्तमान सन्दर्भों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने में पूरी तरह सक्षम है।

आज उत्तर-आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में हर कोई भौतिकवाद और पश्चिमी सभ्यता को अपनाकर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ में लगा है ऐसे में गिरीश कर्नाड एक समर्थ नाटककार के रूप में मिथक, नीति कथाओं, दंत कथाओं, लोक कथाओं का प्रयोग कर वर्तमान मनुष्य को व्यापक फलक पर प्रस्तुत करते है। कर्नाड नेययाति नाटक में वर्तमान विसंगतियों तथा विद्रुपताओं को उद्घाटित करने के लिए मिथकीय घटनाओं को माध्यम रूप में अपनाया है, जिसमें इन्होंने कल्पना का समावेश किया है। कर्नाड ने ययाति, पुरु, देवयानी और शर्मिष्ठा के अलावा कुछ काल्पनिक पात्रों जैसे चित्रलेखा एवं स्वर्णलता की सर्जना की है। नाटक में मिथक द्वारा वर्तमान जीवन की निरर्थकता, संवेदनहीनता, आक्रोश, व्यक्ति के अंतरद्वंद को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। 'ययाति' गिरीश कर्नाड का प्रथम नाटक है जिसका प्रकाशन 1961 में हुआ। मिथकीय पृष्ठभूमि में लिखे गए इस नाटक द्वारा नाटककार ने समकालीन जीवन की असंगतियों, छटपटाहट, ईश्र्या, लिप्सा, अन्तर्द्वंद को उकेरा है। इस नाटक की रचना कर्नाड ने किशोरावस्था के उत्साह में मात्र 22 वर्ष की आयु में की थी जब वे 'रोडस छात्रवृत्ति प्राप्त करके आगामी अध्ययन के लिए इंग्लैंड के आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में जा रहे थे लेकिन नाटक की रचना से पूर्व वह इस बात से अनभिज्ञ थे कि उन्हें भविष्य में एक विशिष्ट पहचान मिलेगी। एक श्रेष्ठ नाटककार के रूप में कर्नाड ने मिथक का प्रयोग करके ययाति, हयवदन, नागमण्डल और अग्नि और वर्षा आदि महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

ययाति नाटक की कथा के मूल में महाभारत के आदिपर्व की मिथक कथा वर्णित है। ययाति चन्द्रवंश का यशस्वी तथा शक्तिशाली राजा था, जो कुशलता और पराक्रम के लिए प्रसिद्ध था, जिसकी चर्चा कर्नाड ने पुरु द्वारा उसकी महानता का गुणगान करते हुए प्रस्तुत की है - ''पुरु: मेरे पिता जी ने किस प्रकार पहली बार ही पचास ऋचाओं को कंठस्थ कर लिया था!... एक बरगद पर आपके खड्ग का गहरा चिन्ह अब भी है। 'मेरे पिता जी ययाति महाराज का केवल बारह वर्ष की आयु में किया गया खड्गाघात!''[6] लेकिन ययाति अपनी कामुकप्रवृति व यौवन लिप्सा के कारण अपने अस्तित्व को समाप्त कर लेता है। वह अपने राज्य के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है परन्तु यौवन लिप्सा तथा लंबे समय तक जवान बने रहने की प्रबल इच्छा से बढ़कर उसके जीवन में कुछ नहीं । जब उसे ज्ञात होता है कि शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या है तो वह (ययाति) देवयानी (शुक्राचार्य की पुत्री) से विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है और देवयानी के साथ गन्धर्व विवाह करता है। देवयानी एक ब्राह्मण कन्या और ययाति एक क्षत्रिय, वह स्वार्थ-सिद्धि के लिए देवयानी से विवाह करता है ताकि संजीवनी विद्या का ज्ञान प्राप्त करके अमरता प्राप्त कर सके। शुक्राचार्य (असुरों के गुरू) की महानता और शक्ति की व्याख्या धार्मिक ग्रंथों एवं पुराणों में वर्णित है। वे राक्षसों के गुरू थे जिनके पास संजीवनी विद्या थी जिसका ज्ञान प्राप्त कर कोई भी अमर हो सकता था लेकिन संजीवनी का ज्ञान प्राप्त करना सरल कार्य नहीं था। ययाति में अमरत्व को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा थी जिसके स्वार्थ में ही वह क्षत्रीय होते हुए भी देवयानी (ब्राह्मण कन्या) से विवाह करता है। मिथकीय कथा की भांति ही नाटक में ययाति अमरत्व प्राप्त करने के लालच में देवयानी से विवाह करता है। देवयानी को इस सत्य का आभासशर्मिष्ठा द्वारा कराया जाता है। शर्मिष्ठा देवयानी से कहती है -"शुक्राचार्य के पास संजीवनी विद्या थी ... समझीं? संजीवनी मिलने पर तुम्हें क्यों न स्वीकार करे? अक्षय पुष्प के साथ मिले कीड़े की तरह।"[7] शर्मिष्ठा के इस कथन से देवयानी सोचने को विवश हो जाती है, क्या सचमुच उसके साथ धोखा हुआ है और ययाति पर संदेह करने लगती है। वह ययाति से स्पष्ट शब्दों में पूछती है -"मैं क्षत्रिय कन्या नहीं हूँ ...एक बात आर्यपुत्र, आपने मुझसे विवाह क्यों किया।"[8] ययाति अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए देवयानी से विवाह करता है। उसके मन में केवल संजीवनी का लालच बसा है।

वर्तमान समय में भी ययाति जैसे पुरुष देखे जा सकते हैं जिनके कारण दाम्पत्य सम्बन्धों में धोखा, अविश्वास तथा स्वार्थपरता जैसी विसंगतियां आ गई हैं। नाटक में शर्मिष्ठा ययाति की यौवन लिप्सा की ओर संकेत करती हुई उसकी पत्नी देवयानी को सचेत करती है-"यदि तुम शुक्राचार्य की कन्या न होती तो वह तुम्हें वहीं छोड़कर चला जाता तुम्हारे कौमार्य पर अपने रथचक्र की कीचड़ उछालकर तुम्हारा नाम तक बिना पूछे चला जाता।"[9] यहां ययाति का मिथक ऐसे विलासी तथा कामुक व्यक्ति के रूप में चित्रित है जो अपनी भोग प्रवृति तथा लिप्सा के लिए कुछ भी करने को तैयार है। वह देवयानी को केवल इसलिए स्वीकारता है ताकि उसे संजीवनी मिल सके और वह अमर हो जाए।भारतीय समाज में विवाह पश्चात पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए पूरी तरह समर्पित होकर रहते हैं। उनके मध्य तीसरे व्यक्ति के लिए कदाचित कोई स्थान नहीं होता या होना चाहिए लेकिन 'ययाति' नाटक में गिरीश कर्नाड ने महाभारत की मिथकीय कथा के माध्यम से वर्तमान दामपत्य जीवन की यथार्थ स्थिति का अंकन किया है। नाटक में राजा ययाति देवयानी पत्नी के होते हुए भी उसकी सखी शर्मिष्ठा के साथ संबंध बनाता है। लेकिन देवयानी (ययाति की पत्नी) के लिए यह अपमान की स्थिति है। एक पतिव्रता नारी अपने पति को दूसरी स्त्री के साथ नहीं देख सकती और शर्मिष्ठा को महल से जाने के लिए कहती है -"मन हो तो अपनी इच्छा से फाँसी लगा लो। पर यह राज्य छोड़कर चली जाओ।"[10] लेकिन ययाति के लिए भोग-विलास ही प्रमुख है। वह शर्मिष्ठा को राजमहल न छोड़ने की आज्ञा देता है-"रुको शर्मिष्ठा। राजाज्ञा बदल गई है। जाओ मत। ... मैंने शर्मिष्ठा को अपनी रानी के रूप में स्वीकार किया है।"[11] एक परायी स्त्री को अपनी रानी कहना, आज के सम्बन्धों के खोखलेपन को उजागर करता है।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

कर्नाड ने मिथकीय कथा द्वारा आज के व्यक्ति के अस्तित्ववादी चिंतन को उभारा है। अस्तित्ववादी लेखक सार्त्र, कामू आदि ने चुनाव की स्वतन्त्रता एवं उत्तरदायित्व की भावना पर अधिक बल दिया है। सार्त्र का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व का 'क्रूस' स्वयं ही ढोना पड़ेगा। कर्नाड ने नाटक के सूत्रधार द्वारा यही कहलवाया है –"इस दायित्व के भार से न रसिक बच सकता है न विद्वान। इस प्रकार के दायित्व में ही हमारे जीवन का आनन्द है। मानो गत यौवन को ढूँढने के लिए झुका वृद्ध, पाप के अंधकार से ठोकरें खाकर थका ... वैरागी,मृत्यु की चेतावनी के समान और अविस्मरणीय याद की भांति मेरे पीछे चुपचाप चली आने वाली यह मूक नटीं, इन सबके रास्तों में एक ही बात थी। बोधिवृक्ष नहीं, जिम्मेदारी की सलीब। उसी को उठाकर घूमना पड़ता है और अन्त में उसी पर लटक जाना पड़ता है।"[12] यहां वृद्ध पिता 'ययाति', वैरागी पुत्र 'पुरू', मृत्यु का वरण करती 'चित्रलेखा' सभी पात्र अपनी जिम्मेदारी की सलीव उठाने में छटपटाते नज़र आते हैं।

कई पौराणिक कथाओं व मिथकों जैसे रामायण, महाभारत में वचन और श्राप की घटनाएँ उद्घाटित होती हैं। इस नाटक में कच का उल्लेख मिलता हे। देवयानी ययाति से विवाहपूर्व अपने ही पिता के शिष्य कच से प्रेम करती है, कच वृहस्पति का पुत्र है जिसके प्रेम को देवयानी ने ठुकरा दिया था। जिसके लिए कच देवयानी को श्राप देता है कि वह (देवयानी) ब्राह्मण पुत्री होकर भी क्षत्रिय से विवाह करेगी। नाटक में इस मिथक को शर्मिष्ठा उद्घाटित करती है –"तुममें पुरुषजाति के प्रति जो तिरस्कार था, वह भूल गई। कच ने जब तुम्हारा तिरस्कार किया था और तब तुमने प्रतिज्ञा की थी, वह भूल गई।"[13]शर्मिष्ठा द्वारा अपने पिता को दिए गए वचन का उल्लेख हमें मिथकीय कथा में मिलता है, मिथकीय कथा में वर्णित है कि शर्मिष्ठा ने अपने पिता को वचन दिया था कि वह उम्र भर देवयानी की दासी बनकर रहेगी। शर्मिष्ठा ने देवयानी को सूखे कूँए में धकेल दिया था और ययाति द्वारा उसे कूँए से बाहर निकाला जाता है। इसी कुकृत्य से क्रुद्ध होकर देवयानी दण्ड के रूप में शर्मिष्ठा को आजीवन अपनी दासी बनाने का प्रस्ताव अपने पिता शुक्राचार्य तथा शर्मिष्ठा के पिता के समक्ष रखती है। अपने परिवार पर आए संकट को टालने के लिए शर्मिष्ठा पिता को वचन देती है जिसका नाटक में शर्मिष्ठा उल्लेख करती है –"मैं देवयानी की दासी बनकर रहूँगी। यह वचन मैं अपने पिताजी को दे चुकी हूँ।"[14] पिताजी को दिए गए वचन को निभाने के लिए शर्मिष्ठा देवयानी के विवाह के उपरान्त महल में रहने लगती है परन्तुशर्मिष्ठा और ययाति के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जिससे क्रोधित होकर देवयानी शर्मिष्ठा तथा ययाति के अनैतिक सम्बन्धों का सच पिता शुक्राचार्य को बताती है। ययाति के इस कपटी तथा अनैतिक आचरण के लिए शुक्राचार्य उसे शाप देते हैं कि वह आयु से पहले ही बूढ़ा हो जाएगा और शाप का निवारण यह बताया कि यदि कोई अपना यौवन ययाति को दे दे तो वह पुनः यौवन प्राप्त कर लेगा। नाटक में पुरु ययाति का छोटा पुत्र पिता का बुढ़ापा ग्रहण करता है, यह घटना महाभारतीय कथा से आधार ग्रहण करती है। नाटककार ने पुरु के माध्यम से एक सहनशील, बुद्धिमान व आज्ञाकारी व्यक्तित्व का परिचय दिया है। पुरु के पास धन वैभव की कोई कमी नहीं है लेकिन वह स्वयं को महापुरुष और महापराक्रमी नहीं समझता। उसका मानना है कि वह एक साधारण पुरुष है जिसे किसी वस्तु का मोह, लालच, घृणा, द्वेष और ईर्ष्या नहीं है। वह की भी परवाह नहीं करता। पुरु के माध्यम से कर्नाड ने उद्घाटित किया है कि संतान अपने माता-पिता का सहारा होती है। जिसे आज के अधिकांश युवा भूलते जा रहे हैं। पुरु के साधारण व्यक्तित्व को उसकी पत्नी चित्रलेखा भी नहीं समझ पाती और आत्महत्या कर लेती है। आत्महत्या की घटना मिथकीय कथा में वर्णित नहीं है। नाटककार ने ययाति को उसके कुकृत्यों का अहसास दिलाने के लिए चित्रलेखा की मृत्यु दिखाई है। जिसके कारण ययाति को अपने कर्मों का अहसास होता है और वह शर्मिष्ठा के साथ वानप्रस्थ जाता है, वानप्रस्थ जाने का दृश्य पूर्णतः मिथकीय घटना है। नाटक में इसकी पुष्टियययाति के संवाद द्वारा होती है –"अपने किए पापों को अरण्य में व्रत करके धोना है।"[15] अन्तःकर्नाड ने ययाति में महाभारत के आदिपर्व की मिथकीय कथा

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

के माध्यम से वर्तमान समाज की भौतिकतावादी सोच, स्वार्थ, लिप्सा, द्वेष, अभिभावकों की अपने संतान के प्रति उदण्डता, कर्तव्यहीनता तथा अस्तित्ववादी सोच को दर्शाया है।

निष्कर्ष:

अतः कहा जा सकता है कि इस नाटक में गिरीश कर्नाड महाभारत के आदिपर्व की पौराणिक विषयवस्तु को नाटक का आधार बनाकर युगीन विसंगतियों और विद्रुपताओं को प्रबलता से प्रस्तुत करते हैं। नाटककार ने मिथकीय कथा द्वारा व्यक्ति की यौवन लिप्सा, अनैतिक सम्बन्धों की वजह से बिखरते दाम्पत्य रिश्ते, अस्तित्ववादी चिंतन, अभिभावकों की अपनी संतान के प्रति उदंडता, नश्वरता व अनश्वरता के बीच फंसे मनुष्य को प्रस्तुत किया है। अपने अन्य नाटकों की तरह गिरीश कर्नाड इस नाटक में भी पौराणिक कथा भूमि में माध्यम से जीवन की शाश्वत छटपटाहट को सांकेतिक करते हुए अपनी कल्पना शक्ति से एक अविस्मरणीय नाट्यानुभव की रचना करते हैं।

संदर्भ ;

1. डॉ. अमरनाथ डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठसं 281
2. **https//www.britannica.com**
3. कालिका प्रसाद (सं .), वृहत हिंदी कोश, बनारस: ज्ञानमंडल लिमिटेड, **2009**
4. डॉ. नगेन्द्र, मिथक और साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 7
5. मुकुंद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, खंड -7, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं. 85
6. गिरीश कर्नाड, ययाति, राधाकृष्ण प्रकाशन,**2019**, पृष्ठ सं. 44,45
7. वही, वही पृष्ठ सं. 16
8. वही, वही पृष्ठ सं. 18
9. वही, वही पृष्ठ सं. 17
10. वही, वही पृष्ठ सं. 34
11. वही, वही पृष्ठ सं. 35
12. वही, वही पृष्ठ सं. 08
13. वही, वही पृष्ठ सं.17
14. वही, वही पृष्ठ सं. 21
15. वही, वही पृष्ठ सं. 91

Copyright @ 2023 Author